**Dr Jasbir Singh (March 2022). Munshi Premchand and Farmer Life**
*International Journal of Economic Perspectives*,*16*(3),78-81
Retrieved from https://ijeponline.org/index.php/journal

# मुंशी प्रेमचन्द और किसान जीवन

**डॉ. जसबीर सिंह**
**सहायक प्रोफसर,**
**हिन्दी–विभाग,**
**डी. ए. वी. महाविद्यालय, चीका (कैथल)**

प्रेमचन्द्र किसानों के लेखक माने जाते हैं तथा प्रेमचन्द ने किसानी जीवन का बहुत–ही अच्छे से वर्णन किया है। किसानी जीवन पर प्रकाश डालने से पूर्व प्रेमचन्द के जीवन पर प्रकाश डालते हैं। प्रेमचन्द का नाम धनपत राम था। इनका जन्म 30 जुलाई, 1880 को लमही गांव में हुआ था, जो बनारस शहर से चार मील है तभी प्रेमचन्द ने अपने साहित्य में ग्रामीण और शहरी जीवन का बखूबी वर्णन किया है। इनके पिता मुंशी अजायब लाल डाकखाने में क्लर्क थे। प्रेमचन्द कायस्थ थे– ब्राह्मण नहीं थे। प्रेमचन्द ने अपने साहित्यिक जीवन की शुरुआत उर्दू भाषा में की थी तथा धीरे–धीरे वे हिन्दी भाषा में गए। प्रेमचन्द ने अपने साहित्य में उपनिवेशकालीन भारतीय किसान का चित्रण किया है। उनके साहित्य के कलापक्ष की समुचित व्याख्या करने के लिए उनके साहित्य के सामाजिक, आर्थिक पक्ष का अध्ययन भी अपेक्षित है। उनकी सर्जनात्मक कल्पना जिस–जिस सामाजिक यथार्थ के ज्ञान पर टिकी हुई है, उससे उनकी सर्जनात्मक कल्पना की शक्ति निर्धारित हुई है। प्रेमचन्द के साहित्य में आलोचकों और साहित्यकारों ने भी अपनी गहरी रुचि दिखाई है तथा प्रेमचन्द्र की प्रतिभा को परिभाषित करने का प्रयास किया है और इसके साथ–साथ तत्कालीन भारतीय समाज को समझने के लिए भी उनके साहित्य का प्रयोग किया है।

प्रेमचन्द साहित्य केन्द्र में तत्कालीन भारतीय किसान है उनकी सम्पूर्ण कला चेतना भारतीय किसान की जीवन पद्धति से प्रभावित और निर्धारित हुई है। उनके साहित्य के एक बड़े हिस्से का विषय क्षेत्र किसान जीवन से लिया गया है। इनकी सर्वोत्तम रचनाएं वे ही मानी गई हैं, जिनमें भारतीय किसान का जीवन प्रतिबिम्बित हुआ है। 'गोदान', 'प्रेमाश्रम', 'कर्मभूमि' जैसे उपन्यासों और 'सवासेर गेहूं', 'पंच–परमेश्वर', 'मुक्ति मार्ग', 'पूस की रात', 'कफन' जैसी कहानियों में मुख्य रूप से किसान के जीवन के विविध पक्षा को भी उभार कर सामने रखा गया है। इसके अलावा जिन रचनाओं के विषय किसानों से सम्बन्धित नहीं हैं,

© 2022 by The Author(s). ISSN: 1307-1637 International journal of economic perspectives is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.
*Corresponding author*: Dr Jasbir Singh
*Submitted: 27 Dec 2021, Revised: 09 January 2022, Accepted: 18 February 2022, Published: 31 March 2022*

उनमें भी कहीं न कहीं किसान दृष्टि का उपयोग किया गया है। इसलिए भारतीय किसान के जीवन की वास्तविक और ऐतिहासिक स्थिति का विश्लेषण आवश्यक है। प्रेमचन्द ने अपनी रचनाओं में किसान को जिस 'जमीन' पर खड़ा किया है उसकी पड़ताल आवश्यक है।[1]

प्रेमचन्द का मानना है कि किसान समाज का आधार होता है। किसान ही समाज का उत्पादक वर्ग है और किसान की उन्नति में ही देश की उन्नति है तथा उसकी बदहाली में ही देश की बदहाली है। उपनिवेशक में किसान की हालत सबसे दयनीय है। सभी उसके शत्रु हैं, उसका कोई मित्र नहीं। तत्कालीन समाज में किसान सबका नरम चारा है। पटवारी को नजराना और दस्तूरी न दे, तो गांव में रहना मुश्किल। जमींदार के चपरासी और कारिंदों का पेट न भरे तो निबाह ने हो। थानेदार और कॉस्टेबल तो जैसे दामाद हैं। जब उनका दौरा गांव में हो जाए किसानों का धर्म है वह उनका आदर–सत्कार करे, नगरनयाज दे, नहीं एक रिपेर्ट में गांव का गांव बंध जाए। कभी कानूनगो आते हैं, कभी तहसीलदार, कभी डिप्टी, कभी जण्ट, कभी क्लकटर, कभी कमिशनर, किसान को उनके आगे हाथ बांधे हाजिर रहना चाहिए। उनके लिए रसद चारे, अण्डे–मुर्गी, दूध–घी का इंतजाम करना चाहिए।[2]

प्रेमचन्द ने अपनी रचनाओं में किसान के क्रांतिकारी रूप की बजाय उसकी बदहाली का जिक्र ज्यादा किया है। अगर हम प्रेमचन्द की रचनाओं का विश्लेषण करें, तो हम किसान के दुश्मनों और दोस्तों को अच्छी तरह से समझ सकते हैं। किसानों का शोषण हर समाज में होता रहा है चाहे वह पूंजीवाद समाज हो या सामंतवादी समाज। परन्तु उपनिवेशों में किसानों के शोषण का रूप अलग है। उपनिवेशवाद में तो एक किसान का ही शोषण नहीं होता बल्कि एक राष्ट्र से दूसरे राष्ट्र का शोषण होता है परन्तु मुख्य रूप से तो उपनिवेशों में किसान का ही शोषण होता है, अतः किसान का शोषण राष्ट्रीय शोषण के रूप में सामने आता है। साम्राज्यवादी अंग्रेजों की आय का मुख्य स्रोत जमीन की मालगुजारी था। तभी किसानों का शोषण अधिक से अधिक हुआ।

प्रेमचन्द एक सोद्देश्य रचनाकार हैं। इन्होंने सामाजिक दृष्टि से उपयोगी और हितकर रचनाएं की हैं। प्रेमचन्द साहित्य को मनोरंजन का साधन नहीं मानते बल्कि सामाजिक परिवर्तन का साधन मानते हैं। इन्होंने प्रगतिशील लेखक 'संघ' (1936) के अध्यक्षीय भाषण में कहा था कि ''हमारी कसौटी पर वही साहित्य खरा उतरेगा जिसमें उच्च चिंतन हो स्वाधीनता

© 2022 by The Author(s). ISSN: 1307-1637 International journal of economic perspectives is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.
*Corresponding author*: Dr Jasbir Singh
*Submitted: 27 Dec 2021, Revised: 09 January 2022, Accepted: 18 February 2022, Published: 31 March 2022*

का भाव हो, सौन्दर्य का सार हो, सृजन की आत्मा हो, जीवन की सच्चाइयों का प्रकाश हो, जो हममें गति, संघर्ष और बेचैनी पैदा करे, सुलाये नहीं क्योंकि अब और ज्यादा सोना मृत्यु का लक्षण है।''[3] प्रेमचन्द ने अपने साहित्य में किसान के हर पहलू को छुआ है तथा किसान की दशा और दिशा दोनों का बखूबी वर्णन किया है। प्रेमचन्द का 'गोदान' उपन्यास तो किसान का महाकाव्य है। 'गोदान' में प्रेमचन्द ने किसान को एकदम जीवंत रूप प्रदान कर दिया है। प्रेमचन्द का यह भी कहना है कि साहित्य तभी सफल है जब वह जीवन में परिवर्तन कर सके और उसको सही दिशा दे सके। प्रेमचन्द कहते हैं कि औपनिवेशिक समाज में सबसे ज्यादा शोषित वर्ग किसान होता है। अतः शोषण का विरोध भी सबसे ज्यादा वही करता है। वह मेहनत की कमाई खाता है इसलिए हराम की कमाई खाने वालों से घृणा करता है, लेकिन जब तक वह असमर्थ और असंगठित होता है इसलिए उसकी घृणा मुखर नहीं हो पाती और वह विनयशीलता के दामन में दबी रह जाती है। प्रेमचन्द ने इस आवरण को हटाकर करोड़ों–करोड़ों मूक भारतीय किसानों की भावनाओं को वाणी दी तथा इसके साथ–साथ समाज के शोषकों के प्रति भी किसानों की घृणा को प्रकट कर दिया। भारतीय किसान प्रेमचन्द के साहित्य के द्वारा अपने शोषकों को अच्छी तरह से पहचान सकता है तथा उनसे बचने के उपाय भी ढूंढ सकता है। प्रेमचन्द साहित्य के माध्यम से वह अपने अतीत में झांककर भी देख सकता है। प्रेमचन्द ने अपने साहित्य में किसान को जीवंत रूप प्रदान कर दिया है। किसानों के प्रति दया भाव को कई साहित्यकारों ने दिखाया है पर उनके प्रतिनिध बनकर बोलने वाले प्रेमचन्द ही हुए हैं।

भारतीय किसान अपनी सामाजिक स्थिति, परम्पराओं और रूढ़ियों से जकड़ा हुआ है, इसलिए उसके दृष्टिकोण में भी पिछड़ापन है। इसी कारण वह इस पिछड़ेपन तथा असमानता को अपना भाग्य मान बैठा है। ईश्वर भी किसान की पूर्ण आस्था है तथा वह अपनी पीड़ा को अपना भाग्य मानकर वह संतोष कर लेता है और इसी सोच के कारण उन व्यक्तियों को भी अपना दोस्त मानता है जो उसका शोषण करते हैं। प्रेमचन्द ने किसानों के इस पिछड़ेपन का बखूबी से वर्णन किया है तथा उन बुद्धिजीवियों की आलोचना की है जो किसानों के निरक्षर होने के कारण उन्हें मूर्ख–गंवार मानते हैं। 26 जनवरी, 1934 को 'निरक्षरता की दुहाई' शीर्षक टिप्पणी में प्रेमचन्द ने लिखा– ''हमारे किसानों की निरक्षरता की दुहाई देना एक फैशन–सा हो गया है, लेकिन किसान निरक्षर होकर भी बहुत से साक्षरों से ज्यादा चतुर है।

© 2022 by The Author(s). ISSN: 1307-1637 International journal of economic perspectives is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.
*Corresponding author*: Dr Jasbir Singh
*Submitted: 27 Dec 2021, Revised: 09 January 2022, Accepted: 18 February 2022, Published: 31 March 2022*

साक्षरता अच्छी चीज है और उससे जीवन की कुछ समस्याएं हल हो जाती हैं, लेकिन यह समझना कि किसान निरा मूर्ख है, उसके साथ अन्याय करना है। वह परोपकारी है, त्यागी है, परिश्रमी है, किफायती है, दूरदर्शी है, हिम्मत का पूरा है, नीयत का साफ है, दिल का दयालु है, बात का सच्चा है, धर्मात्मा है, नशा नहीं करता और क्या चाहिए। कितने साक्षर हैं, जिनमें ये गुण पाए जाएं। हमारा तजुर्बा तो यह है कि साक्षर होकर आदमी काइयां, बदनीयत, कानूनी और आलसी हो जाता है। किसान इसलिए तबाह नहीं है कि वह साक्षर नहीं है बल्कि इसलिए कि जिन दशाओं में उसे जीवन का निर्वाह करना पड़ता है, उनमें बड़े से बड़ा विद्वान भी सफल नहीं हो सकता।''[4]

प्रेमचन्द ने सामान्यतः किसानों का ही पक्ष लिया है। इसके अलावा प्रेमचन्द किसानों की दृष्टि को इस प्रकार से उपस्थित करते हैं जो किसानों के अच्छे जीवन की परिकल्पना के रूप में उपस्थित होती हैं। प्रेमचन्द सम्पूर्ण समाज के लिए तो नहीं पर किसान के अच्छे जीवन की बहुत कामना करते हैं। वे जानते हैं कि किस प्रकार एक किसान अपने जीवन की छोटी–छोटी आकांक्षाओं को पूरी करने के लिए तरसता रहता है और ये आकांक्षाएं उसकी जीवन भर पूरी नहीं हो पाती। होरी की गाय लेने की इच्छा भी ऐसी ही इच्छा है जो अथक परिश्रम करने के बावजून भी पूरी नहीं हो पाती। प्रेमचन्द ने उनकी ऐसी अपूर्ण इच्छाओं के माध्यम से यह दिखाया है कि किसानों के शोषण की मात्रा कितनी अधिक है। वह होरी जो जीवन भर मेहनत करता है एक गाय लेने के लिए, पर जब मरता है तो पण्डित दातादीन गोदान की आवश्यकता समझाते हैं। आखिर किसान क्या चाहते हैं, स्वयं किसान (गोदान में) कहते हैं– ''हम राज नहीं चाहते, भोग–विलास नहीं चाहते, खाली मोटा–मोटा पहनना और मोटा–मोटा खाना और मरजाद के साथ रहना चाहते हैं।''[5]

मरजाद के साथ रहना मतलब कि वह किसान है किसान ही बना रहे मजदूर ना बने। वह अपने खेतों की रक्षा के लिए भी संघर्ष करता है। 'बलिदान' का गिरधर खेत छूट जाने के बाद मर जाता है क्योंकि ''इतने दिनों तक स्वाधीनता और सम्मान का सुख भोगने के बाद अधम चाकरी की शरण लेने के बदले वह मर जाना अच्छा समझता था।''[6]

प्रेमचन्द ने जब गोदान लिखा था, तब वह खुद भी कर्ज के बोझ से दबे हुए थे। 'गोदान' की मूल समस्या ऋण की समस्या है। इस उपन्यास में किसानों के साथ मानों वह आपबीती भी कह रहे थे। किसानों के जीवन के अलग–अलग पहलुओं पर वे उपन्यास लिख

© 2022 by The Author(s). ISSN: 1307-1637 International journal of economic perspectives is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.
*Corresponding author*: Dr Jasbir Singh
*Submitted: 27 Dec 2021, Revised: 09 January 2022, Accepted: 18 February 2022, Published: 31 March 2022*

चुके थे। 'प्रेमाश्रम' में बेदखली और इजाफा लगान पर 'कर्मभूमि' में बढ़ते हुए आर्थिक संकट और किसानों की लगानबंदी की लड़ाई पर लेकिन कर्ज की समस्या पर उन्होंने विस्तार से कोई उपन्यास न लिखा था। 'गोदान' लिखकर उन्होंने किसान की उस समस्या पर प्रकाश डाला जो आए दिन उनके जीवन को सबसे ज्यादा स्पर्श करती हैं।''[7] प्रेमचन्द किसानों के प्रतिनिधि लेखक रहे हैं। इन्होंने किसानों से जुड़ा हुआ शायद ही ऐसा कोई पहलू हो जिसका वर्णन अपने साहित्य में न किया हो। इन्होंने किसान की हर समस्या को भी उठाया है तथा उनके समाधानों की ओर भी संकेत किया है। सच्चे अर्थों में प्रेमचन्द किसानों के लेखक हैं।

**निष्कर्ष –** प्रेमचन्द किसानों के मसीहा रहे हैं। उनका गोदान तो किसानों का महाकाव्य है। इसके अलावा भी इन्होंने अपने साहित्य में किसानों की समस्याओं को अधिक से अधिक उठाया है, अतः हम कह सकते हैं कि प्रेमचन्द ने अपने साहित्य में किसानों के हर पहलू को छुआ है।

**संदर्भ–**

1 प्रो. रामबक्ष, प्रेमचन्द और भारतीय किसान, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण–2012, पृ. 182

2 गोदान, पृ. 292

3 साहित्य का उद्देश्य, पृ. 26

4 विविध प्रसंग, भाग–2, पृ. 107

5 गोदान, पृ. 153

6 मानसरोवर, भाग–8, पृ. 72

7 डॉ. रामविलास शर्मा, प्रेमचन्द और उनका युग, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण 2012, पृ. 96

© 2022 by The Author(s). ISSN: 1307-1637 International journal of economic perspectives is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.

*Corresponding author*: Dr Jasbir Singh

*Submitted: 27 Dec 2021, Revised: 09 January 2022, Accepted: 18 February 2022, Published: 31 March 2022*